उपभोक्ता जागरुकता : एक सम्प्रत्यात्मक अध्ययन

बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी की

एम0एड0 उपाधि की आंशिक पूर्ति हेतु प्रस्तुत

लघु शोध प्रबन्ध

वर्ष – 2017

शोध पर्यवेक्षक

डा0 राजीव अग्रवाल

विभागाध्यक्ष

शोधकर्त्री

निधि अग्रवाल

रोल नं0–301151830012

शिक्षक – शिक्षा विभाग

अतर्रा पोस्टग्रेजुएट कॉलेज, अतर्रा (बाँदा) उ0प्र0

घोषणा पत्र

मैं, निधि अग्रवाल पुत्री श्री राकेश कुमार अग्रवाल, छात्रा एम0एड0 उत्तरार्द्ध (2016–17), अतर्रा पी0 जी0 कॉलेज अतर्रा, बाँदा शपथ पूर्वक घोषणा करती हूँ कि "उपभोक्ता जागरुकता : एक सम्प्रत्यात्मक अध्ययन" शीर्षक से प्रस्तुत यह लघु शोध प्रबन्ध मेरा स्वयं का मौलिक कार्य है एवं इसमें प्रयुक्त समस्त प्रदत्त मेरे द्वारा संकलित किए गये हैं, जिसे मैंने डॉ0 राजीव अग्रवाल जी, विभागाध्यक्ष शिक्षक–शिक्षा विभाग, अतर्रा महाविद्यालय, अतर्रा बाँदा के कुशल निर्देशन में पूर्ण किया है।

मैं यह भी घोषणा करती हूँ कि यह कार्य इससे पूर्व किसी भी उपाधि के लिए अथवा प्रकाशनार्थ प्रस्तुत नहीं किया गया है।

दिनांक –

शोधकर्त्री

स्थान – अतर्रा

(निधि अग्रवाल)

डॉ0 राजीव अग्रवाल
विभागाध्यक्ष

शिक्षक–शिक्षा विभाग
अतर्रा पी0जी0 कॉलेज,
अतर्रा (बाँदा)

प्रमाण पत्र

प्रमाणित किया जाता कि निधि अग्रवाल पुत्री श्री राकेश कुमार अग्रवाल, छात्रा एम0एड0 उत्तरार्द्ध (2016–17) ने मास्टर ऑफ एजुकेशन की उपाधि हेतु अपना लघु शोध–प्रबन्ध, **उपभोक्ता जागरुकता : एक सम्प्रत्यात्मक अध्ययन,** मेरे सतत् पर्यवेक्षण में रहकर पूर्ण किया है।

प्रस्तुत लघु शोध–प्रबन्ध इनका मौलिक अध्ययन है, जो इनके परिश्रम एवं कर्मठता का परिणाम है।

मैं इनके उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ।

दिनांक– **शोध पर्यवेक्षक**

स्थान– अतर्रा

(डॉ0 राजीव अग्रवाल)

आभार

प्रथमतः कण—कण में विद्यमान शक्ति स्वरुप परमात्मा के चरण कमलों में मेरा कोटिशः प्रणाम। जिनकी कृपा से मेरे ज्ञान चक्षु उन्मेषित हुए तथा कठिनतम कार्य के सम्पादन में सद्बुद्धि एवं आत्मबल प्राप्त हुआ। इनकी असीम अनुकम्पा से आज की पावन बेला में मैं अपनी अदम्य लालसा को गुरुवृन्द के चरण कमलों में समर्पित करती हूँ।

प्रस्तुत लघु शोध—प्रबन्ध परमादणीय गुरु डॉ0 राजीव अग्रवाल जी, विभागाध्यक्ष, शिक्षक—शिक्षा विभाग, अतर्रा पी0 जी0 कॉलेज अतर्रा, बाँदा के कुशल निर्देशन व मार्गनिर्देशन से ही सम्भव हो पाया है। अतः मैं उनके प्रति श्रद्धावनत होकर हृदय से आभार एवं कृतज्ञता प्रकट करना अपना परम पुनीत कर्तव्य समझती हूँ। इन्होनें ही मुझे शोध विषय के चयन के लिए प्रेरित किया व इनके निर्देशन में मेरा शोध कार्य करना मेरे परम सौभाग्य का सूचक है। इन्होनें अपना अमूल्य समय देकर मेरी अनन्त जिज्ञासाओं का समाधान किया तथा समय—2 पर भाषा अभिव्यक्ति सम्बन्धी उपयोगी सुझाव दिये। इनका कर्मठ, सौहार्दपूर्ण व्यवहार, गहन अभिप्रेरणा, सूक्ष्म पर्यवेक्षण एवं स्नेहयुक्त सहयोग ने मेरा शोधकार्य में उत्साहवर्द्धन किया है। आपका मधुर व्यवहार, सहयोग एवं अमूल्य विचार मुझे जीवन में सदैव अविस्मरणीय रहेंगें।

प्रस्तुत लघु शोध—प्रबन्ध के प्रणयन, परिमार्जन व परिवर्धन में प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रुप से सहयोग करने वाले सभी गुरुजन डॉ0 सुशील कुमार जी, राममूर्ति पाण्डेय जी, अनूप राज जी, अमित बाजपेयी जी, योगेन्द्र जी, महेन्द्र जी, वीरेन्द्र जी, मनीष जी, सौरभ जी एवं सभी इष्ट मित्रों सोनाली, मधु, दीपा, अर्चना, धनेश्वरी, अंकिता, सुरभी, अनुराधा, हेमा, प्रिया, पंकज, कुलदीप, विनय को धन्यवाद देना अपना परम कर्त्तव्य समझती हूँ, जिनके शुभाशीर्वाद एवं शुभ कामनाओं से यह कार्य पूर्ण हुआ है।

मैं अपन परिवार दादा ससुर स्व0 श्री राधेश्याम जी अग्रवाल, ससुर जी श्री इन्द्रमणि जी अग्रवाल, सासु जी श्रीमति चन्द्र रेखा जी अग्रवाल, देवर अपूर्व व आश्रय अग्रवाल की भी आभारी हूँ जिन्होंने मुझे गृहकार्यो में सहयोग किया व पर्याप्त समय देकर विषम परिस्थितियों में आत्मिक सम्बल एवं स्नेह प्रदान कर मेरा पग—पग पर साहस बढ़ाया है, मुझे प्रोत्साहित किया है। इनके अथक प्रयासों से ही आज मैं शिक्षा के इस शिखर पर पहुँचने में समर्थ हो सकी हूँ। मैं अपने परिवार की सदैव ऋणी रहूँगी।

प्राचीन मान्यता है कि माता—पिता के प्रसन्न होने पर सभी देवता प्रसन्न हो जाते है। मैं वात्सल्य की मूर्ति पितृ श्री राकेश कुमार जी अग्रवाल तथा मातृ श्रीमति सीता अग्रवाल की प्रति हृदय से आभार व्यक्त करती हूँ, इनका सहयोग मेरे जीवन में अतुलनीय है। इनका आर्शीवाद आद्योपान्त मेरे साथ रहा है साथ—ही—साथ इनकी अहर्निश प्रेरणा ने मुझे सदा शक्ति प्रदान की है। अतएव मैं इनकी आजीवन ऋणी हूँ और इनके प्रति नत मस्तक हूँ।

इस लघु शोध–प्रबन्ध के प्रणयन में मेरे पति श्री आकाश जी अग्रवाल व मेरी बुआ सास श्रीमति नमिता माधव अग्रवाल, उनकी पुत्री माध्विका अग्रवाल और मेरी बहन नीलम अग्रवाल के अमोघ स्नेह, ज्ञान व उत्साहवर्धन से मैं अत्यन्त लाभान्वित हुयी हूँ व इनके आभार को शब्द रुप में देने में मेरी लेखनी असमर्थ है। मेरा यह लघु प्रयास उन्हीं के त्याग, अगाध प्रेम तथा सहयोग का फलस्वरुप है। मैं ईश्वर व माता–पिता को धन्यवाद देती हूँ कि मुझे ऐसे पति, बुआ सास, ननद व बहन दी। इनके विषय में यह कहना अतिश्योक्ति न होगा कि यदि इन्होनें किसी पंगु व्यक्ति का भी उत्साहवर्धन कर दिया तो वह भी पहाड़ चढ़ जाएगा। इन्होनें यथासम्भव पूर्ण सहायता सदा ही की जिसके लिए मैं सदा ही कृतज्ञ रहूँगी।

मैं अपने भाइयों मयंक अग्रवाल व दीपक अग्रवाल को लैपटॉप की व्यवस्था करने व प्रीटिंग में पूर्ण सहयोग करने के लिए सहृदय धन्यवाद देती हूँ, जिन्होनें इस लघु शोध–प्रबन्ध का कार्य बहुत सावधानी से करवाया। इस शोध–प्रबन्ध के प्रस्तुतीकरण में अज्ञानतावश हुई किसी भी प्रकार की त्रुटि हेतु मैं क्षमाप्रार्थी हूँ।

अन्त में, मैं उन अन्य सभी सहयोगीजनों का आभार प्रकट करती हूँ जिनका नाम भूलवश यहाँ उल्लेखित नहीं हो पाया है।

धन्यवाद!

(निधि अग्रवाल)